Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

Original Article

व्यक्तित्व एवं मानसिक विकास

Dr. Shobha.L
Associate professor, Department of Hindi M.S. Ramaiah college of Art's science and commerce Bengaluru
Email-Shobhamsrcac@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-170905
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 9(A)
Pp.26-28
September 2025
Submitted:22 Aug. 2025
Revised: 3 Sept. 2025
Accepted:21 Sept. 2025
Published: 30 Sept. 2025

संक्षेप

व्यक्तित्व का अर्थ और किस प्रकार मनुष्य मानसिक विकास में परिसर के प्रभाव से विकसित करता है।व्यक्तित्व को प्रभावित करनेवाले तत्व।वंशानुगत,वातावरण,संवेगिक तत्व से मानव अपने विकास की गति को परिवर्तित करते हुए विकास की ओर अग्रसर होता है।भारतीय दृष्टिकोण में व्यक्तित्व आत्म-ज्ञान का ही दूसरा नाम है।

संकेत शब्द:- *व्यक्तित्व,शारीरिक, वंशानुगत,वातावरण,भाव,आध्यात्म,मानसिक सांस्कृतिक,सतोगुण,तमोगुण आदि।*

भूमिका:

व्यक्तित्व शब्द अंग्रेजी शब्द Personality का हिन्दी रूपान्तर है। Personality शब्द लेटिन भाषा के persona से विकसित हुआ है, जिसका अर्थ है mask (नकली चेहरा)। सिसरो ने persona शब्द का विवेचन अग्रलिखित रूपों में किया हैं -

1. भूमिका के अनुसार अपने चेहरे को बदलना।
2. उपयुक्त भूमिका के आधार पर सम्पूर्ण व्यक्तित्व की भूमिका करना ।
3. भूमिका के आधार पर गुणों को विकसित करना
4. एक नवीन व्यक्तित्व को धारण करना, जो वास्तविक से सर्वथा भिन्न है।

व्यक्तित्व के क्षणिक परिवर्तित स्वरूप को वास्तविक व्यक्तित्व मानना गलत है। अतः आज व्यक्तित्व की नवीन अवधारणा का उदय हुआ, जो सम्पूर्ण शक्तियों,क्षमताओं आदि का सम्मिश्रण है। व्यक्तित्व एक विस्तृत प्रत्यय है। इसके अन्तर्गत मनुष्य के आन्तरिक एवं बाहरी दोनों प्रकार के गुणों का समन्वय रहता है। व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले मुख्य तत्वों (कारको) में मनोवैज्ञानिक कारक भी सम्मिलित किये गये है। इन कारकों में अभिप्रेरणा, चरित्र, बौद्धिक क्षमतायें, रूचियों, अभिवृत्तियों आदि आती है, जो कि व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। यहाँ शिक्षक का यह दायित्व हो जाता है कि वह व्यक्तित्व के इन उपर्युक्त कारकों को नियन्त्रित करें।

व्यक्तित्व एवं मानसिक विकास

व्यक्तित्व (Personality)

व्यक्तित्व शब्द अंग्रेजी शब्द Personality का हिन्दी रूपान्तर है। personality शब्द लेटिन भाषा के persona से विकसित हुआ है, जिसका अर्थ है mask (नकली चेहरा)। सिसरो ने persona शब्द का विवेचन अग्रलिखित रूपों में किया हैं –

5. भूमिका के अनुसार अपने चेहरे को बदलना।
6. उपयुक्त भूमिका के आधार पर सम्पूर्ण व्यक्तित्व की भूमिका करना ।
7. भूमिका के आधार पर गुणों को विकसित करना

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
Dr. Shobha.L , Associate professor, Department of Hindi M.S. Ramaiah college of Art's science and commerce Bengaluru

How to cite this article:
L, S. (2025). व्यक्तित्व एवं मानसिक विकास. Journal of Research and Development, 17(9(A)), 26–28. https://doi.org/10.5281/zenodo.17492186

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17492186
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

8. एक नवीन व्यक्तित्व को धारण करना, जो वास्तविक से सर्वथा भिन्न है।

व्यक्तित्व के क्षणिक परिवर्तित स्वरूप को वास्तविक व्यक्तित्व मानना गलत है। अतः आज व्यक्तित्व की नवीन अवधारणा का उदय हुआ, जो सम्पूर्ण शक्तियों, क्षमताओं आदि का सम्मिश्रण है। व्यक्तित्व एक विस्तृत प्रत्यय है। इसके अन्तर्गत मनुष्य के आन्तरिक एवं बाहरी दोनों प्रकार के गुणों का समन्वय रहता है।

व्यक्तित्व की परिभाषा

(Definition of personality)

1. एन. एल. मन के अनुसार "व्यक्तित्व को किसी व्यक्ति की संरचना, व्यवहार के ढंग, रूचि, अभिवृति, योग्यता एवं अभिरूचियों के एक विशेष संगठन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। " "Personality may be defined as most characteristic integration of an individual's structures, modes of behavior, interest, attitudes, capacities, abilities and aptitudes." - N.L. Munn.

2. केम्फ के अनुसार, "व्यक्तित्व उन अभ्यासों के रूपों का समन्वय है जो किसी वातावरण में व्यक्ति विशेष के समायोजन को प्रस्तुत करता है।" "Personality is the integration of those systems of habits that represent one individual's characteristic adjustments of his environment" - Kemph.

3. "व्यक्तित्व व्यक्ति के अन्दर उन मनोशारीरिक संस्थानों का गत्यात्मक संगठन है, जो वातावरण के साथ उसका अनूठा समायोजन स्थापित करता हैं।" "Personality is the dynamic organization with in the individual of those psycho physical systems that determine his unique adjustment to his environment"- G.W. Allport.

4.एस. सी. वारेन के अनुसार "व्यक्तित्व, व्यक्ति के विकास की किसी भी अवस्था में होने वाला समग्र मानसिक संगठन है" "Personality is the entire mental organization of a human being at any stage of his development"

व्यक्तित्व के निर्धारक प्रभावित करने वाले तत्त्व Determinants of personality - Effects factors

व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले तत्व (Personality effecting traits)- व्यक्ति का बाह्य आचरण उसकी जन्मजात तथा अर्जित वृत्तियाँ, उसकी आदतें और स्थायी भाव, उसके आदर्श और जीवन के मूल्य, ये सब मिलकर एक ऐसे प्रमुख स्थायी भाव (Master Sention या 'आदर्श स्व' (Ideal-Self) को जन्म देते हैं, जो मानव के व्यक्तित्व का प्रमुख आधार है। इस प्रकार 'स्व' से जुड़े निम्नलिखित **तत्त्व (Traits) या लक्षण हैं. -**

1. शारीरिक तत्व (Physical Traits)- इसके अन्तर्गत व्यक्ति का रंगरूप, भार, शारीरिक सुंदरता तथा वाणी एवं स्वर आदि आते है।

2. वंशानुक्रम (Heredity) . बालक वंशानुक्रम से ही - (1) सामान्य प्रवृत्तियाँ (2) मूल प्रवृत्तियाँ (3) संवेग (4) बुद्धि (5) कार्यक्षमता (6) स्नायुमण्डल (1) प्रतिक्षेप और चालक तथा (8) आन्तरिक स्वभाव आदि को प्राप्त करता हैं और दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित करता है।

3. वातावरण (Environment)- मनुष्य के व्यक्तित्व पर वातावरण का जो प्रभाव पड़ता है उसके संबंध में ऑगबर्न (ogburn) तथा निमकॉफ (Nimkoff) ने कहा हैं - "व्यक्तित्व को प्रभावित करने में प्राकृतिक वातावरण की उपेक्षा नहीं की जा सकती।" वातावरण भी निम्नलिखित प्रकार का होता हैं (1) पारिवारिक वातावरण, (2) पास-पड़ोस का वातावरण, (3) मैत्रिक मण्डली का वातावरण, (4) विद्यालय का वातावरण।

4. सांवेगिक तत्व (Emotional Traits) संवेगों का भी मनुष्य के व्यक्तित्व पर बहुत प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति पर बाह्य वातावरण तथा अर्न्तमुखी ग्रन्थियों का इन तत्वों पर प्रभाव पड़ता है। एक मिलनसार, हँसमुख एवं साहसी व्यक्ति दूसरों पर शीघ्र ही प्रभाव जमा लेता है, परन्तु चिड़चिड़ा तथा उदास मन वाला व्यक्ति कम ही प्रभावित कर पाता है।

5. लिंग तत्व (Sex traits)- पुरुष तथा स्त्री में बहुत अंतर होता है। पुरूष साहसीबाह्य जगत में रहने वाला एक निर्भय प्राणी होता हैं। जबकि स्त्री भीरू, लज्जाशील तथा बाह्य जगत के सामने न आने वाली होती है। इसी कारण वह कठिनाइयों से नहीं जूझ पाती।

6. मानसिक तत्व (Mental traits)- मानसिक तत्वों में बुद्धि, कल्पना, तर्कशक्ति, प्रत्यक्षीकरण, निर्णय शक्ति तथा स्मृति आदि महत्वपूर्ण तत्व आते है। बुद्धि सबसे अधिक महत्वपूर्ण तत्व है और उसका प्रयोग हर स्तर पर हर कार्य में बुद्धि के द्वारा होता है।

7. सांस्कृतिक तत्व (Cultural traits) - संस्कृति संस्कारों का समूह है। ये पूर्वजों से प्राप्त होती है और पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है, एक पीढी आने वाली पीढी पर संस्कार डालती रहती है। व्यक्तित्व के निर्माण में संस्कारों का बड़ा हाथ होता है। मनोविश्लेषक युग ने सामूहिक अज्ञात मन में जातीय गुणों या पूर्वजों से प्राप्त गुणों को माना है। इस प्रकार व्यक्ति के व्यक्तित्व में उसकी जातीय संस्कृति (Racial Culture) होती है।

8. समाजीकरण (Socialization) - मनुष्य के व्यक्तित्व पर समाज का प्रभाव पड़ता है। मनुष्य को सामाजिक होना चाहिये। अतः समाजीकरण के कारण व्यक्तित्व प्रभावित होता है।

व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले मुख्य तत्वों (कारको) में मनोवैज्ञानिक कारक भी सम्मिलित किये गये है।

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

इन कारकों में अभिप्रेरणा, चरित्र, बौद्धिक क्षमतायें, रूचियों, अभिवृत्तियों आदि आती है, जो कि व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

यहाँ शिक्षक का यह दायित्व हो जाता है कि वह व्यक्तित्व के इन उपर्युक्त कारकों को नियन्त्रित करें।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि मानसिक दबाव एवं चिंता के कारण ऐसे है जो कि व्यक्तिगत, सामाजिक, परिवारिक एवं विद्यालयी जगत से सम्बन्धित होते है। ये कारण प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से छात्रों के मानसिक दबाव एवं चिंता के लिये उत्तरदायी होते है।

आधार ग्रंथ

शिक्षा और मनोविज्ञान
1. धीर सिंह
2. Dr. O. P. शर्मा
3.निर्मल कुमार आर्य
4. अरुण कुमार सिंह